द्वितीय अध्याय

2. देवेश ठाकुर की जीवनयात्रा एवं साहित्यकर्म

2.1 देवेश ठाकुर : जीवनयात्रा

व्यक्ति का निर्माण व्यक्ति विशेष के अनुभवों और प्रभावों से होता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक रामकृष्ण टंडन के अनुसार, "व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की सम्पूर्ण मानसिक तथा शारीरिक योग्यताओं और विशेषताओं का वह समन्वय है, जिसमें दूसरों की अपेक्षा अपनी विशिष्टता भिन्न होती है ।"[1] वास्तव में व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण उसके परिवेश के आधार पर होता है । इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न होता है । हमारे विवेच्य साहित्यकार 'देवेश ठाकुर' भी इसके अपवाद नहीं है । उनका व्यक्तित्व भी अनेक संघर्षों का फल है ।

2.1.1 जन्म

देवेश ठाकुर का जन्म 23 जुलाई, 1933 को अल्मोड़ा के एक छोटे-से गाँव पैठानी में हुआ था । यहीं पर उनका अधिकांश बचपन व्यतीत हुआ ।

2.1.2 शिक्षा

इन्होंने अपने गाँव में केवल दूसरी कक्षा तक पढ़ाई की । आगे की पढ़ाई में उनको पिता के स्थान-परिवर्तनों के साथ विभिन्न स्थानों पर जाना पड़ा । नजीबाबाद से इन्होंने हाई स्कूल की परीक्षा पास की । इंटर की पढ़ाई के बाद आर्थिक विपन्न परिवार से किसी सहायता के बिना देहरादून आए । बी० ए० तथा एम० ए० की पढ़ाई डी० ए० वी० कॉलेज देहरादून से पूरी की । यहाँ तक पहुँचने में उन्हें कड़ा संघर्ष करना पड़ा । पिता जी सेवानिवृत्त हो गए थे । इन्हें पढ़ाई और जीवन-यापन हेतु धन जुटाने के लिए छोटे-बड़े न जाने कितने काम करने पड़े । दो-दो तीन-तीन दिनों के फाँके भी बर्दाश्त

---

1. रामकृष्ण टंडन, मनोविज्ञान के मूल आधार, नेशनल बुक डिपो, मुरादाबाद, 1961, पृ० 226

किए किंतु अध्ययन करते जाने के संकल्प से डिगे नहीं । इसी लगन के बल पर उन्होंने हिन्दी साहित्य में विश्वविद्यालयीन उच्चतम डिग्री डी॰ लिट्॰ भी अर्जित की । तथापि उनके स्वतंत्र शोधकार्य, हमारी दृष्टि में डी॰ लिट्॰ के योग्य कार्य से भी बड़े माने जा सकते हैं । पीएच॰ डी॰ तथा डी॰ लिट्॰ के शोध कार्यों के लिए उन्होंने सागर विश्वविद्यालय (अब डॉ॰ हरी सिंह गौर वि॰ वि॰) को चुना । पीएच॰ डी॰ के उनके निर्देशक आचार्य नंददुलारे वाजपेयी थे।

2.1.3 साधारण एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व

अपने साहित्य की ही तरह देवेश ठाकुर ने अपने व्यक्तित्व को भी खूब चुस्त-दुरुस्त रखा है । लेखन की ही तरह डॉक्टर साहब अपने रहन-सहन-पहनावे की प्रति भी जागरूक हैं । पैंट पर खूबसूरत ढीला कुर्ता, कंधे से लटकता चमड़े का थैला, करीने से बिखरे हुए बाल, छंटी हुई दाढ़ी-मूंछ, चमकती आँखें, दमकता मस्तक, मोहक मुस्कान, स्वाभिमान और विनम्रता से ओत-प्रोत, शिक्षा और साहित्य में रचा-बसा अत्यंत सजीला-बांका । लेकिन बेहद सादा व्यक्तित्व, अत्यन्त आकर्षक और प्रभावशाली । प्रखर बौद्धिकता से भरपूर उनकी उपस्थिति आसपास के लोगों को अपने प्रति चौकन्ना कर देती है । वे अत्यंत ही गंभीर, अध्ययन-अध्यापन में डूबे व्यक्ति हैं, जिन्हें शायद हँसना नहीं आता और गंभीर होने के साथ-साथ वह संकोची और आत्म-लीन से साहित्यकार हैं लेकिन वे हँसते हैं, बोलते हैं, साहित्यिक मित्रों के साथ अत्यन्त सरल और सहज ढंग से व्यवहार करते हैं ।

2.1.4 स्वाभिमानी

यह भी देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व का एक अहम् पहलू है । अपने विचार, अपने वक्तव्य के प्रति दायित्वशील, सतर्क और सावधान । अपने मान-सम्मान-प्रतिष्ठा के प्रति जागरूक, सन्नद्ध । हर स्वाभिमानी व्यक्ति ऐसा ही होता है । देवेश अपने हक के लिए दिल खोलकर लड़ते हैं । लड़ाई साहित्यिक हो या कानूनी, अन्याय के खिलाफ हक की लड़ाई वह पूरी दृढ़ता के साथ लड़ते हैं । लेकिन फिर यह भी है कि अपने मान-सम्मान के प्रति

जागरूक देवेश ठाकुर अपने से कहीं ज्यादा दूसरों के मान-सम्मान का ध्यान रखते हैं, क्योंकि उनके पास नकली कुछ भी नहीं । वे उसी का मान-सम्मान करते हैं, जो उसके काबिल हो ।

2.1.5 साहसी युवक

देहरादून की लक्ष्मण-रेखा के बाहर जिसने कभी पैर न रखा हो, एम० ए० होते ही, बम्बई जैसे महानगर आने का, देवेश ने साहस जुटाया । इनके सिर पर सरस्वती का वरद हस्त था पर लक्ष्मी प्रसन्न नहीं थी । पहाड़ी परिवेश में पला व्यक्ति, बम्बई में संघर्ष करने के लिए चला आया । भाग्य ने उसका साथ दिया और सरकारी कॉलेज में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हुए।

यहाँ बम्बई में इनका प्रारंभिक जीवन बहुत ही संघर्षमय रहा । इन्हें आर्थिक कठिनाइयों से जूझना पड़ा । मुंबई जैसे महँगे महानगर में सरकारी कॉलेज के सहायक अभिव्याख्याता का वेतन बहुत कम होता है । कॉलेज में तृतीय श्रेणी का सेवक होने पर भी, प्रथम श्रेणी के प्रोफेसरों के साथ रहने के कारण, बाहरी दिखावा तो करना ही पड़ता है - भले ही घर में 'ठन-ठन गोपाला' की हालत हो । वेतन का आधे से अधिक तो वह सुदूर कस्बे में बसे घरवालों के लिए मनीऑर्डर द्वारा भेज देता था । शेष बची रकम में वह अपना गुजारा करता था । संभवत: इसी के कारण आरंभ में कुछ अतिरिक्त द्रव्य-प्राप्ति के लिए, इनकी लेखनी मजबूर रही - गाइड्स लेखन के रूप में ।

उन्नीस सौ पचपन में बंबई विश्वविद्यालय ने कॉलेज में कला, विज्ञान और वाणिज्य तीनों संकायों में, प्रथम वर्ष और इंटर के लिए हिन्दी विषय को अनिवार्य बना दिया था लेकिन विद्यार्थी समझते थे कि हिन्दी उन पर थोपी जा रही है । उस समय में कक्षा में डेढ़-सौ से अधिक छात्रों की सँख्या होती थी। इस प्रकार के माहौल में कॉलेज में हिन्दी पढ़ाना लोहे के चने चबाना जैसा था । उत्तर भारत से आए कतिपय हिन्दी के प्राध्यापक अंग्रेजी में कमजोर होते थे । कक्षा में विविध भाषा-भाषी छात्र रहते थे इसलिए

कभी-कभार अंग्रेजी की भी सहायता लेनी पड़ती थी । अक्सर कक्षा में अनुशासन ढीला पड़ जाता था । इस वातावरण में देवेश जी जैसे प्राध्यापकों के छक्के छूट जाते थे । क्लास-कंट्रोल करने की समस्या भी मुँह बाए खड़ी रहती थी । एक पीरियड समाप्त करके कक्षा से बाहर निकलते-निकलते पसीना छूट जाता था । उन दिनों आमतौर पर हिन्दी के प्राध्यापकों की यही हालत थी । देवेश जी के लिए एक तरफ रहने की समस्या थी तथा दूसरी तरफ अर्थाभाव के कारण खाने-पीने के लाले थे और जिस पर नौकरी बनाए रखने का संकट मंडराता रहता था । कुछ लोग जन्म-जात अध्यापक होते हैं, देवेश जी भी उनमें से एक हैं ।

सहायक अधिव्याख्याता के लिए उन्हें शासकीय एलफिनस्टन कॉलेज में साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था । चयन-समिति में उस कॉलेज के प्राचार्य अहमद साहब भी थे । देवेश जी के साक्षात्कार के समय प्राचार्य महोदय ने उनसे कहा कि समझो कि मैं छात्र हूँ । कुछ काव्य पंक्तियाँ मुझे पढ़ाओ । देवेश जी ने यह भूलकर कि 'छात्र' महोदय वास्तव में प्राचार्य हैं और चयन-समिति के सदस्य हैं, उन्हें हिन्दी का मामूली विद्यार्थी मानकर बढ़िया ढंग से एक दोहा समझा दिया । प्राचार्य महोदय खुश हो गए । देवेश जी का अध्यापकी गुण वहीं मालूम हुआ । सिडनहम कॉलेज जैसे बम्बई के मशहूर कॉलेज में, अपनी सहज और स्वाभाविक अध्यापकी-प्रवृत्ति के कारण उस संघर्षमय जीवन में भी वे एक सफल अध्यापक सिद्ध हो गए ।

2.1.6 जिद्दी पत्रकार

छात्र जीवन से ही पत्रिका निकालने की इनकी महत्त्वाकांक्षा प्रारंभ हो गई थी । इनकी यह प्रवृत्ति देहरादून से ही देखी जा सकती है । बम्बई आने पर तो इन्हें वांछित विशाल क्षेत्र मिला । ये कई पत्रिकाओं से जुड़े रहे और कहीं अपने नाम से लिखते तो कहीं गुमनाम से । इसी से तो इनकी लेखनी मँज गई । इसके साथ ही स्वयं-स्फूर्ति से एक-न-एक पत्रिका का सम्पादन करते रहे, प्रकाशन करते रहे, घाटा उठाते रहे फिर भी इस कार्य से बाज नहीं

आए । जब ये सिडनहम कॉलेज में नियुक्त हुए तब वहाँ के हिन्दी साहित्य मंडल में हस्तलिखित 'किरण' नामक भित्ति पत्रिका का संपादन करते रहे । उन्होंने साहस करके इस भित्ति पत्रिका को मुद्रित रूप में प्रकाशित करवाया । कुछ मारवाड़ी छात्रों की सहायता से विज्ञापन आदि बटोरकर, इस कार्य में सफल हो गए । उस दिन वे कितने खुश थे । उन दिनों कॉलेज का एक साहित्य मंडल एक मुद्रित पत्रिका का प्रकाशन करे, यह एक बड़ी उपलब्धि थी। बंबई के किसी कॉलेज से हिन्दी विभाग की मुद्रित पत्रिका का प्रकाशन हो - शायद यह पहला ही उदाहरण है जो देवेश जी की पत्रिका प्रकाशन की जिद्दी प्रवृत्ति के कारण ही संभव हो सका । तब से आज तक ये कई पत्रिकाओं के सम्पादक-प्रकाशक रहे । हिन्दी साहित्य लघु जीवी पत्र-पत्रिकाओं के लिए प्रसिद्ध है । लेकिन इससे संपादक देवेश ठाकुर को कोई फर्क नहीं पड़ा । वे एक न एक नई पत्रिका से जुड़े ही रहे ।

इन्हें पत्रिकाओं के सम्पादक-प्रकाशन का जुनून है और आज 'समीचीन' नामक पत्रिका को यह सौभाग्य मिला है । पत्रकारिता की उनकी यह मौन-साधना उपेक्षित ही रही । आजकल तो पत्रकारिता के क्षेत्र में कितने ही पुरस्कार वितरित किए जाते हैं । चूंकि ठाकुर किसी गुट से सम्बद्ध नहीं हैं, इसलिए वे अपनी पत्रकारिता से संतुष्ट हैं और एक-न-एक पत्रिका निकालने की उधेड़बुन में लगे रहते हैं।

2.1.7 कर्त्तव्य दक्ष गृहस्थ

युवावस्था में देवेश असफल प्रेमी रहे । दोष इनका नहीं था । बंबई की टुटपुंजिया नौकरी देखकर भावी ससूर ने कन्या-दान के लिए मना कर दिया। कहा जाता है कि वैवाहिक जोड़ियाँ स्वर्ग से ही निर्धारित होती हैं । संयोग से सुश्री शीला से विवाह की बात चली और परिणाम देवेश जी चतुर्भुज बन गए । नौकरी पेशे वाली पत्नी, खुद की नौकरी, नित्य लेखन कार्य; इनके बीच निरन्तर जीवन का संघर्ष चलता रहा । दो से चार बनने का सुयोग भी इन्हें प्राप्त हुआ । सौभाग्यवती शीला ने दो सुशील पुत्रियों को जन्म

दिया और इनका अच्छे ढंग से पालन-पोषण किया । बड़ी कन्या आभा परिवार की आभा थी तो छोटी आरती, घर की आरती उतारने योग्य निकली। आभा डॉक्टर बनी तो आरती अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका । दोनों सुपुत्रियाँ अपने-अपने संपन्न घरों में सुखी हैं । अब बूढ़े दम्पत्ति घर में शेष हैं तो शीला अपने 'देबू' का ख्याल रखती है और 'देबू' अपनी पत्नी का । उन्होंने एक सद्गृहस्थ का उत्तरदायित्व भी पूरी शिद्दत से निभाया है और कुशल बेटियाँ भी अपने वृद्ध माता-पिता की ओर बराबर ध्यान देती रहती हैं ।

2.1.8 संकल्पशील

देवेश ठाकुर जी पहाड़ी क्षेत्र के हैं । पहाड़ी लोग कितने जीवट होते हैं यह सभी जानते हैं । ये अपने संकल्प के बड़े पक्के होते हैं । प्रतिकूल परिस्थितियों में भी निरन्तर आगे ही बढ़ते जाना इनकी प्रकृति है । ठाकुर भी यह जानते रहे हैं कि अपने देश में, विशेषकर हिन्दी में साहित्यकार होने का क्या अर्थ होता है और उसकी नियति कैसी होती है । यह जानते हुए भी उन्होंने एक साहित्यकार ही बने रहने का संकल्प किया और उसका निर्वाह वह आज भी पूरी निष्ठा के साथ कर रहे हैं । सच्ची प्रतिबद्धता इसे ही कहते हैं और इस प्रतिबद्धता का निर्वाह विरले ही कर पाते हैं । साहित्यकार के लिए समाज तथा व्यवस्था के कुछ नियम पृथक् नहीं होते । उनका यही स्वभाव होता है कि वे अपना विरोध बर्दाशत नहीं कर पाते । जो इनका विरोध करता है, उसे परास्त करने के लिए खड्ग-हस्त होने में ये तनिक भी विलम्ब नहीं करते ।

2.1.9 जुझारू एवं महत्त्वाकांक्षी

देवेश जी जुझारू एवं महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति हैं । कठिन दिनों में भी जीवट के साथ संघर्ष करते हुए उन्होंने अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने का हर संभव प्रयास किया है । अपने आरंभिक जीवन में जिन अभावों को इन्होंने झेला है, उनसे उन्हें निरन्तर ऊर्जा मिलती रहती है । संकट के वे दिन उन्हें किसी भी समस्या या परेशानी से जूझने की शक्ति प्रदान करते हैं ।

उनके उन दिनों के तमाम मित्र साक्षी हैं कि 'भ्रमभंग' के चन्दन का संघर्ष उनके अपने ही जीवन का संघर्ष है । चंदन के चरित्र में देवेश के सारे लक्षण मौजूद हैं । वह 'मान सहित विष खायके' नीलकण्ठ जगदीश बन जाता है लेकिन 'बिना मान का अमृत' भी नहीं पीना चाहता । परिवार को साथ लेकर चलने का चंदन का संकल्प और उसके लिए कठोर संघर्ष जीवन पथ का हलाहल पीना ही है लेकिन परिजनों के व्यवहार का 'बिना मान का अमृत' वह नहीं पी पाता । माँ और बहन के प्रति परम्परागत धारणाओं के विपरीत स्पष्ट किंतु कटु निर्णय कोई 'देवेश' रचित चंदन ही ले सकता है ।

2.1.10 स्पष्टवादिता

इनकी स्प्ष्टवादिता एवं दोटूकपन इनके व्यक्तित्व को एक अलग आयाम देता है । पारिवारिक ही नहीं सामाजिक, साहित्यिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में भी इन्होंने अपनी इस विशेषता के कारण बहुत झेला है । एक तरफ उन्हें मित्र मिले हैं तो ऐसे जो आत्मीयता की अनंत गहराइयों से प्रेम करने वाले हैं। दूसरी ओर इनका बैलोसपन और इनकी स्पष्टवादिता इन्हें बहुतों के लिए अप्रिय बना देती है । इसके बावजूद ये जो कुछ सोचते हैं, उसे साफ-साफ कह देते हैं । सामने वाले पर इसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, इसकी परवाह नहीं करते। इसका खामियाजा भी इन्हें भुगतना पड़ा है । शिक्षा क्षेत्र में इसी कारण इन्हें उपेक्षित किया गया लेकिन मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी वालों से यह बात छिपी भी नहीं है कि जो लोग जीवन भर इनकी उपेक्षा करते रहे, उनके सिर पर इनका और सिर्फ इन्हीं का भूत सवार रहा । उनकी अथ से इति तक की यात्रा इनसे ही छुटकारा पाने या इनको दबाने के प्रयास में होती रही जबकि उनकी कुचक्रपूर्ण यात्रा से इन्होंने अपनी रचनाधर्मिता के लिए पर्याप्त ऊर्जा पायी। 'गुरुकुल' और 'शिखर पुरुष' उपन्यास इसके प्रमाण हैं जिनमें साहित्य और शिक्षा-जगत में व्याप्त गलाजत को बड़ी शिद्दत के साथ साहसपूर्ण एवं कलात्मक अभिव्यक्ति दी गयी है ।

2.1.11 सफल लेखक

आहार, निद्रा इत्यादि वाली बात तो सब मानव प्राणियों के लिए अनिवार्य है । लेकिन कुछ लोगों के लिए प्रतिदिन लिखना भी अनिवार्य है । जब तक वे कुछ-न-कुछ लिख नहीं लेते, तब तक उन्हें नींद आती । देवेश ठाकुर भी इसी कोटि के अन्तर्गत आते हैं। उनके लिए लिखना उनका नित्य कर्म-धर्म है। बंबई के संघर्षरत जीवन के प्रारंभ में 'अर्थकृते' लिखना उनके लिए नितांत आवश्यक था । उस समय उन्हें 'यशसे' से कोई मतलब नहीं था । कविता-कहानियाँ तो लिख लेते थे; किंतु 'भ्रमभंग' के प्रकाशन तक कोई नहीं जानता था कि देवेश भावी जबरदस्त उपन्यासकार होंगे और उनके उपन्यासों पर एम॰ फिल्॰ एवं पीएच॰ डी॰ के लिए शोध कार्य होगा । संयोग की बात है या भाग्य की बात है पर वास्तविकता है कि हिन्दी के औपन्यासिक क्षेत्र में 'भ्रमभंग' का अच्छा स्वागत हुआ, समीक्षकों ने इस कृति को सराहा । इस कृति ने एम॰ ए॰ के पाठ्यक्रम में भी स्थान बना दिया । यहाँ से उपन्यास लिखने का सिलसिला जारी रहा तो कालांतर में दर्जन भर उपन्यास अलग-अलग प्रकाशकों द्वारा बाजार में लाए गए । साहित्य के क्षेत्र की दलबंदी के कारण उपन्यासकार देवेश उपेक्षित ही रहे । लेकिन देवेश जी की कलम रूकने का नाम नहीं लेती । अपने समस्त साहित्य के आकलन के बाद उन्हें एहसास हुआ कि उनका बहुत सारा साहित्य बिखरा हुआ है । तब उनके मन में रचनावली का भूत सवार हुआ । वे किसी बात का संकल्प कर लेते हैं तो धुन के पक्के होने के कारण, जब तक वह साकार नहीं होता उसके पीछे पड़े रहते हैं । आखिरकार वह भी शुभ दिन आया जब 'देवेश ठाकुर रचनावली' के सात खण्डों का लोकार्पण हुआ । सन्तोष की बात है कि प्रतियाँ भी सब बिक गईं । अब उनके 1992 तक लिखे साहित्य की स्थायी निधि बन गई - रचनावली ।

शोधार्थी इस साहित्य का सदुपयोग कर रहे हैं । आजकल एम॰ फिल्॰ तथा पीएच॰ डी॰ के लिए नए-नए विषयों की तलाश है। इस प्रकार की रचनावालियों से अनुसंधाता स्त्रोत सामग्री संकलित कर लेते हैं । कई विश्वविद्यालयों में देवेश ठाकुर के साहित्य पर उपाधिपरक शोधकार्य सम्पन्न

हुआ है । बहुत कम प्राध्यापकों को इस प्रकार की मान्यता मिलती है । उम्र की तीन चौथाई शताब्दी गुजारने पर भी, आज भी वे नियमित रूप से प्रतिदिन प्रात: उठकर अपनी टेबुल पर डट जाते हैं और जब तक कुछ लिख नहीं लेते, उन्हें संतोष नहीं होता ।

2.1.12 जिज्ञासु अनुसंधाता

एम० ए० तक शिक्षा पाकर देवेश जी सन्तुष्ट नहीं हुए । उन्होंने आगे भी पढ़ाई करने का निर्णय बनाया और शोध के लिए सागर विश्वविद्यालय पहुँच गए । उनके जीवन में अनुसंधान का एक नया द्वार खुला- संघर्षमय वातावरण का एक और आयाम उद्घाटित हुआ । कहाँ बम्बई (याने महाराष्ट्र) कहाँ सागर (अर्थात् मध्य प्रदेश) और कहाँ नजीबाबाद (मतलब उत्तर प्रदेश) इस त्रिभुज यात्रा में समय निकालकर अनुसंधान हेतु सागर में हाजिरी लगाने लगे । देवेश जी उद्यमी शोधार्थी हैं । आचार्य नंददुलारे वाजपेयी जी जैसे पैनी दृष्टि के समीक्षात्मक साहित्यकार का मार्गदर्शन और लोहे की लेखनी पकड़ने वाले देवेश जैसे उधमी छात्र । उन्होंने सीमित अवधि में ही अपना शोध-प्रबंध पूरा कर, परीक्षार्थ प्रस्तुत कर दिया । बंबई आने पर जिन्हें देवेश जी गुरुवर मानते थे एक थे प्राध्यापक शशि शेखर नैथानी जी और दूसरे थे प्राध्यापक इंदुप्रकाश पाण्डेय जी; उन्हें भी अनुसंधान के क्षेत्र में पीछे छोड़कर वे आगे बढ़ गए । ये दोनों ज्येष्ठ प्राध्यापक जीवन के पंद्रह-बीस साल बाद डॉक्टर बने । वास्तव में लेखनी के धनी देवेश के लिए लेखन-कार्य बायें हाथ का खेल है । अब उन पर अनुसंधान का भूत सवार हुआ । अधिकांश प्राध्यापक पीएच०-डी० पाते ही समझ लेते हैं कि गंगा नहा लिए और अनुसंधानकार्य पर पूर्णविराम लग गया । लेकिन देवेश जी ने अल्प-विराम दिया और डी० लिट्० उपाधि हेतु और आगे अनुसंधान-कार्य में जुट गए । कुछ समय के बाद उनके सुपरवाइजर पं० वाजपेयी जी उपकुलपति बन कर उज्जैन चले गए और जब डॉ० भगीरथ मिश्र सागर में हिन्दी विभागाध्यक्ष बनकर आये तो देवेश जी उनके मार्गदर्शन में शोधकार्य करने लगे । सतत् प्रायत्नशील और मेहनती होने के कारण निर्धारित समय में उनका शोध-ग्रन्थ परीक्षार्थ प्रस्तुत हो गया । उन्होंने डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की । इस डी० लिट्० ग्रन्थ की श्रेष्ठता इस बात से सिद्ध हो

जाती है कि इस पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने इन्हें दो हजार रूपये का तुलसी पुरस्कार दिया । डी॰ लिट्॰ जैसी उच्चतम उपाधि पाने पर भी उनके बारे में 'विद्या विनयेन शोभते' सटीक बैठती है । यह तारीफे काबिल बात है कि घर की शैक्षिक पृष्ठभूमि शून्य रहने पर भी वे विद्या के क्षेत्र में शिखर तक पहुँच गए । जर्मन पद्धति के अनुसार वे अब डॉक्टर डॉक्टर देवेश ठाकुर हो गए ।

2.2 देवेश ठाकुर का रचना संसार

2.2.1 काव्य

- मयूरिका
- अन्तरछाया
- अवकाश के क्षणों में
- कविताएँ (संयुक्त संकलन)

2.2.2 कहानी

- सिर्फ संवाद

2.2.3 उपन्यास

- भ्रमभंग
- प्रिय शबनम
- काँचघर
- इसीलिए
- अपना-अपना आकाश
- जनगाथा
- गुरुकुल
- शून्य से शिखर तक (महाराष्ट्र राज्य हिन्दी अकादमी द्वारा पुरस्कृत)
- अंततः
- शिखर पुरुष (महाराष्ट्र राज्य हिन्दी अकादमी द्वारा पुरस्कृत)
- जंगल के जुगनू
- जीवा

2.2.4 शोध

- प्रसाद के नारी-पात्र (पीएच॰ डी॰ का शोध-प्रबंध)
- आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ (डी॰ लिट्॰ का शोध-प्रबंध; हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत)

2.2.5 समीक्षा

- नयी कविता के सात अध्याय
- 'नदी के द्वीप' की रचना-प्रक्रिया
- 'मैला आंचल' की रचना-प्रक्रिया
- साहित्य के मूल्य
- साहित्य की सामाजिक भूमिका
- हिन्दी कहानी का विकास
- आलेख ।

2.2.6 किशोर साहित्य

- दो सहेलियाँ (कहानी संग्रह)
- ममता (उपन्यास)
- फूल-पात (संयुक्त संकलन)

2.2.7 कॉलेजोपयोगी

- कॉलेज निबंध और रचना
- हिन्दी प्रबन्ध प्रदीप
- व्यवहार वीथिका (पत्राचार, अनुवाद तथा सार-लेखन)

2.2.8 संपादन

- हिन्दी की पहली कहानी
- रचना-प्रक्रिया और रचनाकार
- प्रेमचंद साहित्य के अध्येता : कमल किशोर गोयनका
- आजादी की आधी सदी और आम आदमी-1,2,3
- हिन्दी साहित्य तथा साहित्येतिहास: अंतरानुशासनों का अनुशीलन: शोध, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत परियोजना ।

2.2.9 रचनावली

- देवेश ठाकुर रचनावली (24 चुने हुए ग्रन्थों का संकलन) सात खण्डों में ।
- अन्य 2000 से अधिक लेख, कविताएँ, कहानियाँ, शोध-पत्र तथा समीक्षाएँ प्रकाशित ।

2.3 देवेश ठाकुर के साहित्य पर प्रकाशित आलोचनात्मक ग्रन्थ

- देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार : सं॰ डॉ॰ नंदलाल यादव, केंद्रीय विद्यालय-1, मुंबई-40005 ।
- कथा-शिल्पी देवेश ठाकुर : डॉ॰ सतीश पाण्डेय, के॰ जे॰ सोमैया कॉलेज, मुंबई ।
- देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में : डॉ॰ भानुदेव, शुक्ल, सागर (हरीसिंह गौर) विश्वविद्यालय, सागर ।
- गुरुकुल : मूल्याँकन और पुनर्मूल्याँकन : सं डॉ॰ सरेश चन्द्र चुलकीमठ, (कर्नाटक युनिवर्सिटी, धारवाड़)
- पांडुलिपि (व्यक्तित्व और कृतित्व का अनुशीलन) : सं॰ डॉ॰ ब्रह्मदेव मिश्र (गोवा विश्वविद्यालय, गोवा)
- अल्पविराम -देवेश ठाकुर : साहित्यिक यात्रा के पचास वर्ष (संपादक: डॉ॰ सतीश पाण्डेय)

2.4 देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर स्वीकृत शोध-प्रबंध (पीएच॰ डी॰)

- देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य : डॉ॰ पी॰ एस॰ पाटील (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) (प्रकाशित) ।
- हिन्दी उपन्यासों में प्रयोगधर्मिता: (देवेश ठाकुर के उपन्यासों के विशेष संदर्भ में) : डॉ॰ कमल चौरासिया (सागर विश्वविद्यालय, सागर) (प्रकाशित) ।
- देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व : डॉ॰ आत्मा राम नारायण दाभिलकर (नागपुर विश्वविद्यालय) ।

- देवेश ठाकुर के उपन्यासों की भाषा : डॉ॰ शोभना हिम्बोली (दक्षिण भारत, हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास (धारवाड़ केंद्र) ।
- देवेश ठाकुर का उपन्यास साहित्य : एक आलोचनात्मक अध्ययन : डॉ॰ नीलिमा सिन्हा (रांची विश्वविद्यालय) ।
- देवेश ठाकुर के उपन्यासों में सामाजिक चिंतन : डॉ॰ प्रवीण गर्ग (उस्मानिया विश्वविद्यालय) ।
- देवेश ठाकुर के उपन्यासों में नारी पात्र : डॉ॰ माधवी बागी (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर) (प्रकाशित)।
- देवेश ठाकुर के उपन्यासों में सामाजिकता : डॉ॰ चिनम्मा (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास (धारवाड़ केंद्र)।
- देवेश ठाकुर तथा भालचन्द्र निमाड़े के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ॰ रमेश गवली (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर)।
- देवेश ठाकुर के उपन्यासों में युग बोध : डॉ॰ बिमल कुमार प्रसाद (बंगलौर विश्वविद्यालय) ।

2.5 एम॰ फिल्॰ :

- देवेश ठाकुर के भ्रम-भंग उपन्यास का अनुशीलन : मधवी बाजी (शिवाजी) ।
- देवेश ठाकुर के उपन्यास : मध्यवर्गीय समस्याओं के संदर्भ ('जनगाथा' के विशेष संदर्भ में) : वन्दना जैन (आगरा) ।
- देवेश ठाकुर कृत 'जनगाथा': एक अध्ययन : रेणुका नैसर्गी (द॰ भा॰ हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास) ।
- उपन्यासकार देवेश ठाकुर : संगीता व्यास (उस्मानिया; हैदराबाद) ।
- देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याएँ : नंदकुमार रानभरे (शिवाजी; कोल्हापुर) ।
- देवेश ठाकुर के 'प्रिय शबनम' उपन्यास का अनुशीलन : सुनिल बनसोड़े (शिवाजी; कोल्हापुर) ।
- देवेश ठाकुर का उपन्यास : 'शून्य से शिखर तक': एक मूल्याँकन : बाबू सिंह सूबेदार (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास (धारवाड़ केंद्र) ।

– देवेश ठाकुर का 'इसीलिए' उपन्यास : एक अनुशीलन : रघुनाथ सिरगांवकर (शिवाजी; कोल्हापुर) ।

– देवेश ठाकुर का 'अपना-अपना आकाश' : एक अनुशीलनः गीता भोंसले (शिवाजी; कोल्हापुर) ।

2.6 एम॰ ए॰ :

– देवेश ठाकुर का उपन्यास साहित्य : कु॰ रीता डॉनियल (नागपुर)।

देवेश ठाकुर का नाम आधुनिक उपन्यासकारों में बड़े गर्व से लिया जाता है । इनका जीवन संघर्षमय परिस्थितियों में व्यतीत हुआ तथा इन्हें सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से निरन्तर जूझना पड़ा। इन परिस्थितियों में भी निरन्तर ये पढ़ाई करते रहे और डी॰ लिट्॰ तक की उच्च डिग्रियाँ प्राप्त कीं तथा विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद पर भी कार्य किया । इनका व्यक्तित्व सादा एवं प्रभावशाली है। ये स्वाभिमानी, साहसी, संकल्पशील, जुझारू एवं महत्त्वकांक्षी, स्पष्टवादी प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं । इन्होंने अपना गृहस्थ जीवन कर्त्तव्यदक्ष होकर निभाया । हर प्रकार की बात को वे बिना किसी डर व झिझक के अपनी रचनाओं में उतार देते हैं । वे एक जिद्दी पत्रकार, सफल लेखक एवं जिज्ञासु अनुसंधानकर्त्ता हैं । वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं जिन्होंने अपने जीवन में उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, कविताएँ, शोध-समीक्षा एवं किशोर साहित्य आदि लिखे हैं लेकिन उपन्यासकार के रूप में इन्हें प्रसिद्धि प्राप्त हुई । आज भी इनका लेखक कार्य और शोध कार्य निरन्तर जारी है जिससे समाज के शोधकर्त्ता, विद्यार्थी और आम आदमी निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं । इनकी रचनाओं को लेकर कई विषयों पर शोध कार्य हो रहे हैं और हो चुके हैं ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि ठाकुर के व्यक्तित्व के गुणों और कृत्तित्व से पाठक वर्ग निरन्तर प्रभावित होता रहेगा तथा जीवन में आने वाली समस्याओं और परेशानियों से अवगत होकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करेगा इसलिए हम इन्हें संघर्षी, संकल्पशील, साहसी, जुझारू लेखक, पत्रकार, अनुसंधानकर्त्ता कह सकते हैं ।